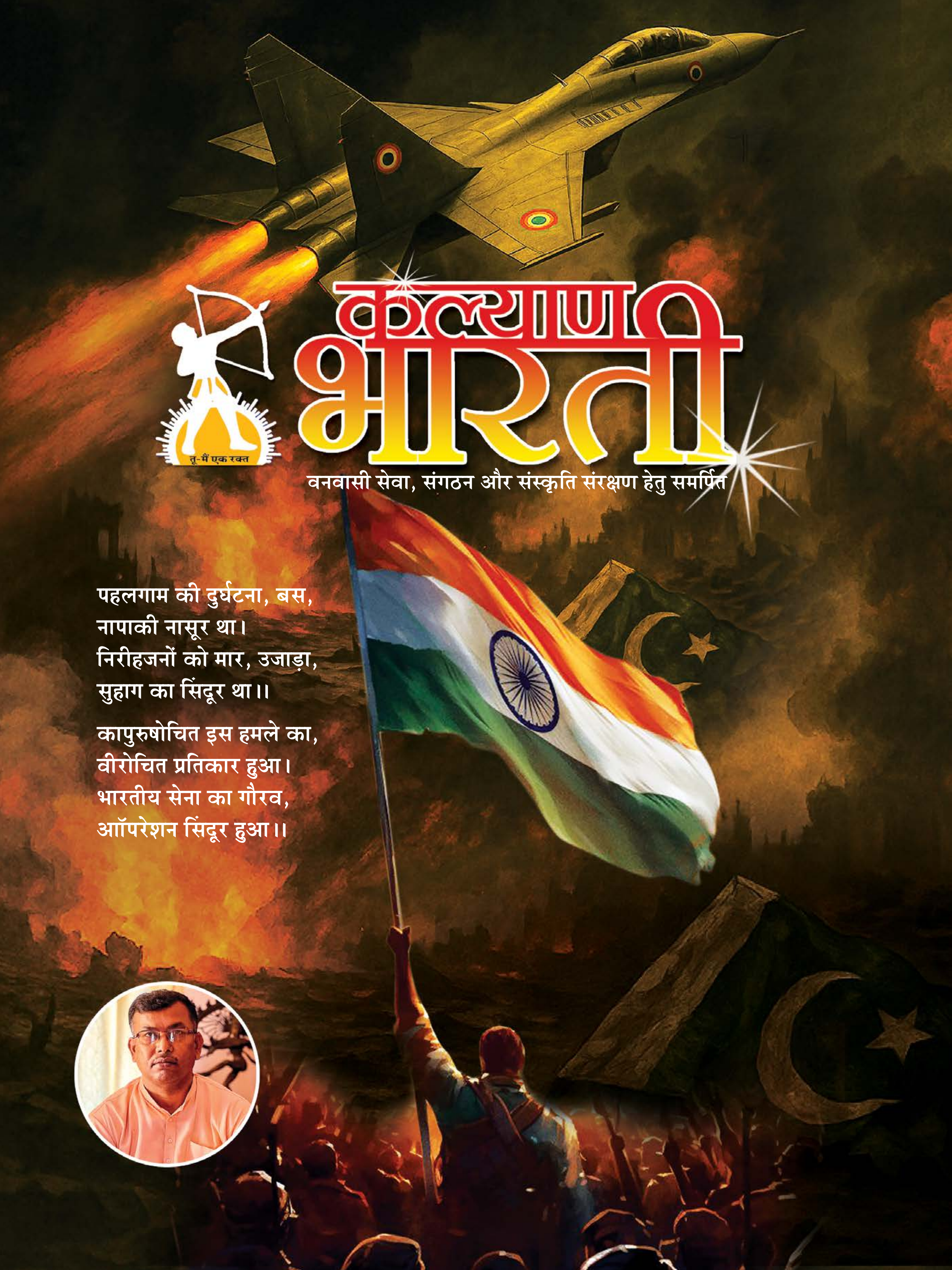
तू-मैं एक रक्त
कल्याण भारती
वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित
पहलगाम की दुर्घटना, बस,
नापाकी नासूर था।
निरीहजनों को मार, उजाड़ा,
सुहाग का सिंदूर था।।
कापुरुषोचित इस हमले का,
वीरोचित प्रतिकार हुआ।
भारतीय सेना का गौरव,
ऑपरेशन सिंदूर हुआ।।

कोलकाता महानगर योजना बैठक की झलकियाँ

हावड़ा महानगर योजना बैठक की झलकियाँ

कोलकाता और हावड़ा की, योजना बैठकें प्रेरक हैं;
गत वर्षों के कार्य की चिंतक, भविष्य की उत्कर्षक हैं।

कल्याण भारती
वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

त्रैमासिक पत्रिका
वर्ष 36, अंक 2
अप्रैल-जून 2025 (विक्रम संवत् 2082)

–: सम्पादक :–
डॉ. रंजना त्रिपाठी

-:सह सम्पादक:-
तारा माहेश्वरी, नीलिमा सिन्हा

–: सम्पादन सहयोग :–
रजनीश गुप्ता

पूर्वांचल कल्याण आश्रम
कार्यालय :
29, वार्ड इन्स्टीच्युशन स्ट्रीट
(मानिकतल्ला पोस्ट ऑफिस के पास)
कोलकाता - 6
दूरभाष : 2360 8334

हावड़ा कार्यालय :
24/25, डबसन रोड
(हावड़ा एसी मार्केट के पास)
हावड़ा - 711101
दूरभाष : 2666 2425

–: प्रकाशक :–
संजय रस्तोगी

Registered with registrar of Newspaper for India Under LIC No. WBHN/2000/3887

Published by Sanjay Rastogi, On behalf of Purvanchal Kalyan Ashram, 29, Ward Institution Street, Near Maniktalla Post Office, Kolkata-700006 and printed at Shreyansh Innovations Pvt. Ltd., 113 Park Street, Kolkata - 700016. Editor : Dr Ranjana Tripathi

अनुक्रमणिका

- संपादकीय... ऑपरेशन सिन्दूर... 2
- उत्तम दा पंचतत्व में विलीन 3
- ''उत्तम'' संगठक मित्र नहीं रहे... 4
- विभिन्न अधिकारियों की शोक... 7
- अनुकरणीय 9
- स्वर्गीय उत्तम दा की स्मृति... 10
- कोलकाता महानगर योजना... 12
- हावड़ा महानगर योजना... 13
- दिल्ली के बिरसा मुण्डा भवन... 14
- वह गौरवमयी क्षण! 14
- कल्याण आश्रम के कार्यकर्तावृन्द... 15
- बोधकथा... पिता की सीख 16
- कविता .... दीपक बनकर... 16

संपादकीय...

ऑपरेशन सिन्दूर : राष्ट्र रक्षा का दिव्य संकल्प

'ऑपरेशन सिन्दूर' एक ऐसा अभियान है जो भारतीय समाज की आत्मा को झकझोरता है और हमें यह याद दिलाता है कि राष्ट्र रक्षा केवल सीमाओं की निगरानी नहीं, बल्कि माताओं-बहनों के सिन्दूर की लाली को सुरक्षित रखने का भी संकल्प है। यह अभियान एक प्रेरणा है – वर्तमान पीढ़ी के लिए और आने वाली पीढ़ियों के लिए भी – कि भारत में नारी का सम्मान सर्वोपरि है और उसकी रक्षा हेतु कोई भी बलिदान छोटा नहीं होता।

भारतवर्ष की संस्कृति, परंपरा और सभ्यता में राष्ट्रभक्ति सर्वोच्च स्थान रखती है। जब-जब राष्ट्र पर संकट आया है, भारत के वीरों ने अद्वितीय साहस और बलिदान का परिचय दिया है। ऐसा ही एक उदाहरण है – ऑपरेशन सिन्दूर। यह केवल एक सैन्य अभियान नहीं, बल्कि यह राष्ट्र रक्षा, नारी सम्मान और आंतरिक सुरक्षा का एक दृढ़ संकल्प था।

भारतवर्ष की मिट्टी वीरों की भूमि रही है। जब-जब मातृभूमि पर संकट आया है, तब-तब यहां के सपूतों ने अपने प्राणों की आहुति देकर रक्षासूत्र को अक्षुण्ण बनाए रखा है। हाल ही में सम्पन्न 'ऑपरेशन सिन्दूर' इस परंपरा की नवीनतम गाथा बन गया है – एक ऐसा सैन्य अभियान, जिसने न केवल आतंक के नापाक मंसूबों को कुचला, बल्कि यह भी सिद्ध किया कि भारत अब केवल सहने वाला नहीं, बल्कि समय आने पर प्रतिकार भी करने में सक्षम है।

'सिन्दूर' नाम ही इस अभियान को विशेष बनाता है – यह उस पवित्रता, मर्यादा और सम्मान का प्रतीक है, जो हमारी मातृभूमि के माथे पर सुशोभित होता है। इस अभियान में सेना ने असीम साहस, धैर्य और तकनीकी दक्षता का परिचय देते हुए सीमावर्ती क्षेत्र में छिपे आतंकियों के अड्डों को ध्वस्त किया। यह केवल सैन्य सफलता नहीं, बल्कि राष्ट्रचेतना का जाग्रत रूप था।

ऑपरेशन सिन्दूर यह दर्शाता है कि भारत में महिला केवल सहनशीलता की प्रतीक नहीं, बल्कि देश की अस्मिता की वाहक भी है। जब नारी के सम्मान पर आंच आती है, तो पूरा राष्ट्र एकजुट होकर उसकी रक्षा करता है।

राष्ट्र सेवा केवल सीमा पर नहीं, बल्कि समाज के हर कोने में होती है। 'ऑपरेशन सिन्दूर' हमें यह सिखाता है कि देशभक्ति कोई वाक्य नहीं, वह एक सतत साधना है – जो बलिदान की वेदी पर पुष्प की भांति चढ़ने को तैयार रहती है।

इस अभियान ने केवल सुरक्षा दृष्टिकोण से नहीं, वरन् जनमानस में विश्वास, आत्मबल और गौरव का संचार किया है। यह हमारे युवाओं के लिए प्रेरणा बन सकता है कि जीवन का सर्वोच्च उद्देश्य केवल स्वार्थ नहीं, अपितु परमार्थ, राष्ट्र और समाज के लिए जीना है।

आइए, हम सब इस 'सिन्दूर' की आभा को अपने जीवन में धारण करें। एकजुट होकर, विचारों से, कर्मों से, अपने अपने क्षेत्र में माँ भारती की सेवा में जुट जाएँ। यही इस अभियान की सच्ची सफलता होगी।

वन्दे मातरम्।

- डॉ. रंजना त्रिपाठी

उत्तम दा पंचतत्व में विलीन

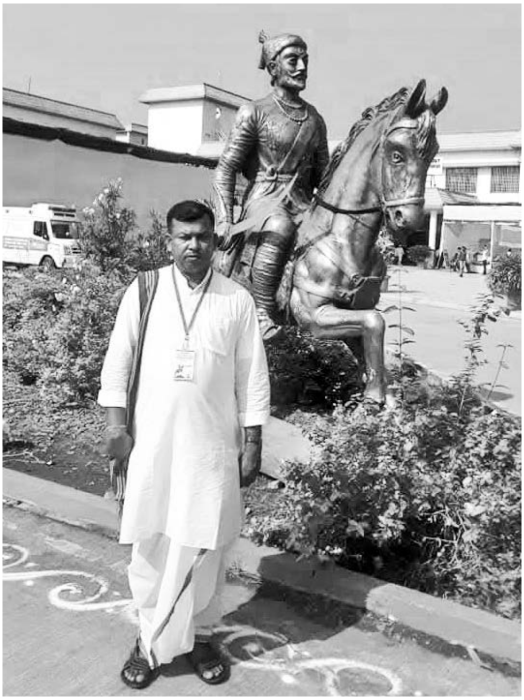

श्री उत्तम महतो दक्षिण बंगाल प्रान्त के संगठन मंत्री का दायित्व पालन कर रहे थे।

आपका जन्म 20 मई 1972 को बांकुड़ा जिले के हेतियापुकुर गांव में हुआ। सन 1988 में आपने संघ के विस्तारक के रूप में सर्वप्रथम पुरुलिया जिला से कार्य प्रारंभ किया। बाद में 1995 में उसी जिला के बागमुंडी तहसील में प्रचारक बन कर कार्य किया।

आगे चलकर पुरुलिया, बीरभूम, मुर्शिदाबाद, तथा अंडमान निकोबार में काम किया। गत सात वर्षों से वनवासी कल्याण आश्रम में दक्षिण बंगाल प्रान्त के सह संगठन मंत्री, फिर संगठन मंत्री के रूप में अपना दायित्व निभा रहे थे। आप एक कुशल संगठक थे। ग्रामीण क्षेत्रों के कार्यकर्ताओं से लेकर नगरीय कार्यकर्ताओं के साथ आपका आत्मीय संपर्क था। हर वक्त हँसते हुए काम करते रहना उत्तम दा की आदत थी। दादा का यूँ असामयिक निधन हम सबके लिए किसी वज्रपात से कम नहीं और संगठन के लिए अपूरणीय क्षति है।

उनके गाँव में उनके तीन भाइयों का परिवार है, माँ और एक बहन है, जिन्हें वो सदा के लिए बिलखता छोड़ गए हैं।

शायद अच्छे व्यक्तियों की आवश्यकता ईश्वर को भी होती है। ईश्वर उनको अपने श्री चरणों में स्थान देवें।

ओम् शांति: शांति: शांति:! ■

''उत्तम'' संगठक मित्र नहीं रहे

– शरद चव्हाण, सह संगठन मंत्री, वनवासी कल्याण आश्रम, उत्तर बंग

दत्तोपंत ठेंगड़ी द्वारा लिखित पुस्तक ''कार्यकर्ता'' में कार्यकर्ता पक्ष के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया गया है। विशेष रूप से संघ विचारधारा में कार्यरत कार्यकर्ताओं के विभिन्न गुणों और पहलुओं के विविध प्रकार के उदाहरण भी प्रस्तुत किये गये गये हैं। कार्यकर्ताओं के साथ रहकर उनके विशेष गुणों को जान लेना और परिचय कर लेना सहज है। मगर कार्यकर्ता को देखकर या कार्यक्षेत्र में घूमकर विशेष प्रतिभासंपन्न कार्यकर्ता की पहचान कर लेना यह अपने आप में विशेष बात होती है। दत्तोपंत ठेंगड़ी जी का मानना था कि कार्यकर्ता की कार्यकुशलता पर ही उसका कार्यक्षेत्र भी गुणसंपन्न और परिश्रमी बन जाता है। कार्यक्षेत्र और कार्यकर्ता के बीच अन्योन्याश्रित संबंध होता है। कार्यक्षेत्र का अवलोकन करने से ऐसा प्रतीत हो कि क्षेत्र में कार्य विश्वास के साथ चल रहा है, कार्यक्षेत्र में नवीनता है, सृजन के नवीन प्रयोग हो रहे हैं, योजना का सटीक क्रियान्वयन हो रहा है और अपने ऊपर वाले लोगों पर श्रद्धा और नीचे वाले लोगों पर विश्वास बरकरार है तो समझ लेना चाहिए कि यहाँ कार्यकर्ता विशिष्ट गुणों की कसौटी पर खरा उतरा है।

अकस्मात देवलोकवासी हो चले अपने ऐसे ही कार्यकर्ता थे उत्तम दा। यथा नाम तथा गुण। वनवासी (पूर्वोत्तर) कल्याण आश्रम दक्षिण बंग के प्रांत संगठन मंत्री प्रचारक रहे उत्तम महतो, दत्तोपंत ठेंगड़ी जी की ''कार्यकर्त्ता'' पुस्तक में वर्णित कार्यकर्ता का सटीक उदाहरण थे। उत्तम महतो उपरोक्त श्रेणी के धनी थे। ''थे'' कहना अटपटा सा लगता है क्योंकि मात्र तीन या चार दिन में संगठन का वृक्ष उखड़ गया। सामान्य से ज्वर की शुरुआत इतना गंभीर स्वरूप लेगी इसका अनुमान किसी ने नहीं किया।

बुखार ने प्रथम शरीर और फिर मस्तिष्क पर बुरी तरह से आघात किया। अस्पताल में भर्ती किए जाते ही ICU में दाखिल किया गया। कार्यकर्ताओं ने उनकी जीवन रक्षा के लिए प्रार्थनाएँ और जप किये। मगर नियति को कुछ और मंजूर था। वेंटीलेटर पर एक दिन रहने के बाद उनकी देह सवेरे शांत हो जाती है और पीछे रह जाती है वही यादें, उनकी संगठन कुशलता, स्वयं के साथ कार्यक्षेत्र की नियोजनबद्धता, साथ काम करने वाले कार्यकर्ताओं में निर्माण हुआ श्रद्धा स्थान। वरिष्ठ हो या अनुज आप के नेतृत्व को सभी स्वीकार करते थे।

पूर्वांचल कल्याण आश्रम दक्षिण बंग का काम काफी पुराना है। अनेक दिग्गज प्रचारक एवं पूर्णकालीन श्रेणी के सर्वोत्तम कार्यकर्ताओं ने कोलकाता केंद्रित दक्षिण और उत्तर बंग का काम विभिन्न आयामों द्वारा एक ऊँचाई तक पहुँचाया है। जनजाति समाज की उन्नति के लिए ''तू मैं एक रक्त'', ''नगरवासी, ग्रामवासी, वनवासी हम सब भारतवासी'' का जीता जागता उदाहरण यानी कोलकाता महानगर और दक्षिण बंग जिसे निवर्तमान प्रांत संगठन मंत्री उत्तम दा ने बहुत ही सुचारू रूप से चलाया था। मेरा और उत्तम दा का परिचय 2017 से है। यहाँ उत्तम दा से जुड़ी कार्यपद्धति की कुछ अविस्मरणीय स्मृतियाँ प्रत्येक अधिकारी और कार्यकर्ता के लिए मार्गदर्शन स्वरूप उद्धृत कर रहा हूँ।

मुंबई में वनवासी कल्याण आश्रम की अखिल भारतीय खेलकूद प्रतियोगिता संपन्न हुई थी जिसमें उत्तम दा कोलकाता से टीम लेकर आए थे। यह उनका कल्याण आश्रम का पहला ही कार्यक्रम था। विभाग प्रचारक से उन्हें वनवासी कल्याण आश्रम के कार्य हेतु भेजा गया था। प्रतियोगिता के बाद मुंबई दर्शन के हेतु उनकी टीम, वे और हम गिरगाँव चौपाटी तथा वालकेश्वर एक साथ घूमे थे। विभिन्न बैठकों में कुछ पल के लिए मिलना हुआ था। उनका स्नेहपूर्ण व्यवहार मुझे हमेशा अभिभूत करता था। मार्च 2025 में कल्याण आश्रम की केंद्रीय कार्यकारिणी की बैठक कोलकाता में संपन्न हुई थी। उसमें उत्तर बंग प्रांत सह संगठन मंत्री के लिए मेरे नाम की घोषणा हुई। मैं दो दिन कोलकाता कल्याण आश्रम के कार्यालय में रहकर तुरंत अपने कार्य क्षेत्र में चला आया था। उसके बाद गत महीने में हुई क्षेत्रीय बैठक, जिला संगठन मंत्री, विभाग संगठन मंत्री वर्ग में मिलना हुआ तब महसूस हुआ कि शांत स्वभाव के उत्तम दा कुछ बातों पर अडिग रहते है। विशेष रूप से कार्य की सटीक जानकारी वास्तव में क्या है; वही सूचित करनी चाहिए। वर्तमान में संख्यात्मक जानकारी प्रांत द्वारा दी जाती थी। इस पर एक प्रांत संगठन मंत्री के नाते उनका कहना था कि, यह संख्या पुरानी है। हमें फिर एक बार सभी कार्यकर्ताओं से मिलकर ठीक तरह से सर्वेक्षण करते हुए सभी के आकलन के बाद जो संख्या प्रत्यक्ष रूप में कागज पर आएगी और धरातल पर दिखेगी, वही देनी चाहिए।

ये बातें वे सिर्फ कहते नहीं थे बल्कि इस विषय में उन्होंने पहल भी प्रारंभ की थी। सांख्यिकी में होरिजेंटल और वर्टिकल संख्या जब तक मिलती नहीं है तब तक उसे प्रस्तुत करना उचित नहीं रहेगा। एक रोल मॉडल अपने आप मेरे सामने उत्तम दा के रूप में प्रस्तुत हुआ। इसलिए प्रांत की कुल संख्या सटीक बताने के लिए महानगर, जिला, ब्लॉक, ग्राम स्तर की संख्या मिलाने की आवश्यकता होगी। और जब तक यह एक समान नहीं हो तब तक प्रांत की संख्या या कोई भी सांख्यिकी सच नहीं माननी चाहिए। जब संगठन के प्रमुख कार्यकर्ताओं की संगठन करते समय यह स्पष्ट धारणा बनती है तब नीचे भी वही भाव और वही दृश्य दिखाई देता है। संगठन को अपने आप में ठीक करने की प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है। जब उन्होंने बैठक में प्रत्यक्ष संख्यिकी आधार प्रस्तुत किया तो मेरे जैसे बंगाल प्रांत में काम करने आए हुए नए कार्यकर्ता के लिए बहुत कुछ सीखने का अवसर मिला था। एक रोल मॉडल उत्तम दा के रूप में मेरे सामने प्रस्तुत हुआ।

जिस बैठक में मेरे नाम की घोषणा हुई वह कोलकाता की बैठक भी उनके संगठन कुशलता का ही परिचायक थी। हमेशा ऐसी बड़ी बैठक या वर्ग होने के बाद जब समीक्षा होती है या विश्लेषण किया जाता है तो बहुत सारी त्रुटियाँ अपने आप सामने आती है और कार्यकर्ता बताते भी हैं। मगर कोलकाता बैठक में हर दृष्टि से कार्य का वैभव सबके सामने उजागर हुआ था और इसमें सबसे बड़ा योगदान उसका होता है जो कार्यक्रम के दौरान दरी के कॉर्नर पर बैठकर सब कुछ देखता रहे और कठिनाई या और कुछ खामियां हैं तो समय पर उसको ठीक करता जाए। उत्तम दा इस कला में पारंगत थे।

समय, संसाधन, मानव शक्ति का नियोजन समयानुसार करने से कार्यक्रम बैठक एक कलाकृति बन जाती है जिसे लंबे समय तक याद किया जाता है और ऐसी कलाकृति को साकार करने वाले उत्तम दा को हम कभी भुला न पाएँगे। यही उनके लिए हम सभी की सच्ची श्रद्धांजलि होगी। शायद ऐसे संगठन कुशल व्यक्ति की संगठन में अधिक आवश्यकता रहते समय ही न जाने ईश्वर को भी ऐसे संगठन कुशल व्यक्ति की क्या आवश्यकता लगी होगी जो असमय में हमसे छीनकर ले गये।

एक बात तो है उत्तम दा का जिस कारण से जाना हुआ, यह आरोग्य क्षेत्र में चुनौती का विषय है। चिकित्सा के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं, लेकिन एक लाइलाज बीमारी आज भी हमारे बीच में छिपकर बैठी है, इसे हम झुठला नहीं सकते। मस्तिष्क ज्वर हमारे बीच से अभी गया नहीं है। यह दुर्भाग्यपूर्ण योग उत्तम दा के साथ घटित हुआ।

सिर्फ हल्के बुखार से प्रारंभ हुई इस यात्रा में मस्तिष्क और बुद्धि का संतुलन खोकर उत्तम दा करीब दो दिनों में ही चले गये। अच्छे संगठक, अच्छे मित्र जिन्होंने मुझे बंग भूमि में आने के दिन से ही और बाद में भी जब-जब मिलना हुआ तब तब यह भरोसा दिलाया था आप चिंता मत करो मैं हूँ, आज हमारे बीच में नहीं है यह स्वीकार करना बहुत ही कठिन लग रहा है। क्षेत्र की बैठक होने के बाद में दो दिन कोलकाता महानगर कार्यालय में मैं रुका था। उत्तम दा कहीं प्रवास में चले गए थे। उनकी गैर मौजूदगी में मैंने कार्य को समझने का प्रयास किया जो काफ़ी मात्रा में फैला हुआ है। क्योंकि कोलकाता महानगर से जनजाति समाज के सर्वांगीण विकास के लिए धन के साथ विभिन्न संसाधन कार्यकर्ताओं द्वारा जुटाए जाते हैं। कुछ प्रकल्प जैसे ग्राम विकास, सिलाई केंद्र निरंतर नियमित चलते हैं। मगर सभी कार्यकर्ताओं को साथ लेते हुए और उन कार्यकर्ताओं के बीच सामंजस्य का तालमेल रखते हुए कार्य करके दिखाने में उत्तम दा सभी के हमसफर थे। ईश्वर आप भी इतने कठोर क्यों हुए कि विपरीत परिस्थिति में जनजाति क्षेत्र के लिए आशा और विकास का जो बगीचा उत्तम दा अपनी कठोरतम मेहनत, परिश्रम से सींच रहे थे, उसे अपने पास बुला लिया।

रमानाथ अवस्थी की पंक्तियाँ -
आज आप हैं, हम हैं
कल कहाँ होंगे, कह नहीं सकते।
जिंदगी ऐसी नदी है,
जिसमें देर तक साथ बह नहीं सकते?

आपसे इतनी ही विनती है असामयिक तरीके से आपने उन्हें अपने पास बुला ही लिया है तो उन्हें सद्गति दें। एक संगठक मित्र के नाते उत्तम दा हमेशा याद रहेंगे और भविष्य में भी आपका मार्गदर्शन हमारा पथ प्रशस्त करता रहे। आपको भावभीनी श्रद्धांजलि! ■

विभिन्न अधिकारियों की शोक संवेदना

उत्तम दा के असामयिक निधन से पूरे संगठन में शोक की लहर फैल गई। उनकी पुण्य स्मृति में अनेक शोक संदेश आये जिनमें प्रतीक रूप से कुछ यहाँ दिये जा रहे हैं।

वनवासी कल्याण आश्रम के अखिल भारतीय सभापति माननीय सत्येन्द्र सिंह जी का संदेश

जब समाचार मिला कि दक्षिण बंग के प्रांत संगठन मंत्री उत्तम दा हमें छोड़कर परमधाम की ओर प्रस्थान कर गए तब मन काफी व्यथित हुआ, किसी तरह मन को स्थिर किया। उत्तम दा मन, वचन और कर्म से सच्चे कर्तव्यनिष्ठ कार्यकर्ता थे, वे हमें सदा याद आते रहेंगे। ईश्वर से विनती करता हूँ कि उन्हें अपने चरणों में स्थान दें और हम सभी कार्यकर्ताओं और परिवारजनों को इस घड़ी में दु:ख सहने का धैर्य, संयम और शक्ति प्रदान करें।

ओम शांति: शांति: शांति:!

माननीय दत्तात्रेय होसबोले (सरकार्यवाह, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ) का संदेश

श्री उत्तम महतो के निधन का दु:खद समाचार सुन कर मन विह्वल हुआ। यह असहनीय आघात

है। सोचता हूँ कि यह कैसे हो गया? सच में मेरी संवेदनाएँ व्यक्त करने को शब्द नहीं मिलते हैं। ऐसे समर्पित, अंत:करण संपन्न कार्यकर्ता का अचानक चले जाना, इतनी कम आयु में जीवन-यात्रा समाप्त करना, अत्यंत वेदनादायक है। इस दु:खद घड़ी में सभी को मेरी संवेदना व्यक्त करता हूँ तथा ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि दिवंगत आत्मा को श्री चरणों में स्थान और शांति मिले। ओम् शांति:!

माननीय गिरीश कुबेर जी का संदेश

हम सबके प्रिय उत्तम दा का इस दुनिया से परलोक गमन होना यह हम सबके लिए बहुत ही दु:खद समाचार है किंतु ऐसा कहते हैं कि जो सबको प्रिय है वह भगवान को भी प्रिय होता है।

भगवान ने हमारे पास कुछ समय के लिये उन्हें भेजा था। ईश्वर अपनी अमानत अपने पास ले गया। इतना ही हम अपने मन को बोल सकते हैं।

ओम शांति: शांति: शांति:!

अखिल भारतीय संगठन मंत्री माननीय अतुल जोग का संवेदना संदेश

आज हम सभी लोग एक दु:खद घड़ी में यहाँ एकत्रित हुए हैं। हम सबके प्रिय आत्मीय हमारे उत्तम दा का असमय निधन हमारे लिए बहुत ही कष्टदायक है। उनकी श्रद्धांजलि सभा में हम उपस्थित हैं। मैं प्रारंभ में उनकी स्मृति को नमस्कार करता हूँ, वंदन करता हूँ। उत्तम दा वरिष्ठ प्रचारक थे। विगत 7 वर्षों से वे कल्याण आश्रम में सक्रिय थे। वे विभिन्न दायित्वों का निर्वाह करते हुए वर्तमान में दक्षिण बंग प्रांत संगठन मंत्री के रूप में कार्यरत थे। उत्तम दा अपने नाम के अनुरूप

उत्तम थे। प्रचारक से यह अपेक्षा रखी जाती है कि प्रचारक जहाँ जायेगा वहाँ उसे रम जाना चाहिए। वहाँ का हो जाना चाहिए। वहाँ की परिस्थिति के अनुसार वहाँ के लोगों के साथ समरस हो जाना चाहिए। मुझे लगता है कि उत्तम दा ने यह कला बहुत अच्छे ढंग से साधी थी। इसीलिए उत्तम दा जब कल्याण आश्रम में आये तो कल्याण आश्रम के ही हो गये। इतनी जल्दी समरस हो गये कि किसी को नहीं लगा कि वे नये हैं। बहुत ही जल्दी सबके साथ घुलमिल गये। उनकी सक्रियता के कारण ही हम देख पा रहे हैं कि सभी कार्यकर्ताओं में उत्साह का संचार हुआ। कार्यवृद्धि हुई। बंगाल का कार्य मानो दौड़ने लगा। अनेक महत्त्वाकांक्षी योजनाएँ उनके मन में रहती थीं। भगवान की इच्छा कुछ अलग थी और भगवान उनको हमारे बीच से लेकर चले गये। समर्थ गुरु रामदास जी ने अलग अलग पुरुषों के लक्षण बताये हैं। उसमें उत्तम पुरुष के लक्षण भी हैं। उनको याद करने से मुझे लगता है कि इसमें से सारे गुण उत्तम दा के अंदर मौजूद थे। जैसा समर्थ रामदास जी कहते हैं कि जो लोगों के साथ वाद विवाद में फँसते नहीं है वे उत्तम पुरुष होते हैं। हमने व्यवहार में उनके साथ यही अनुभव किया। वे बातचीत तो करते थे लेकिन वादविवाद में कभी फँसते नहीं थे। उत्तम पुरुष का दूसरा गुण है कि मन मे सबके प्रति सदिच्छा होनी चाहिए। इसलिए उत्तम दा अजातशत्रु थे।

सभी लोग उनको चाहते थे और वे भी सबसे स्नेह करते थे। समर्थ रामदास जी कहते थे कि अपने स्वभाव की सरलता, सहजता नहीं छोड़नी चाहिए। कभी-कभी पद बढ़ता है, दायित्व बढ़ता है और प्रतिष्ठा मिलने से हम सरलता सहजता खो बैठते हैं लेकिन उत्तम दा के व्यवहार में हमने देखा कि सरलता, सहजता और ऋजुता उन्होंने कभी नहीं छोड़ी। समर्थ रामदास कहते हैं कि किसी के प्रति निंदा व द्वेष नहीं करना उत्तम पुरुष का लक्षण है। उत्तम दा कभी भी नकारात्मक बातें नहीं करते थे। सकारात्मक बातें ही करते थे। इस तरह उनमें उत्तम पुरुष के सभी लक्षण दिखाई देते हैं।आगे समर्थ रामदास जी कहते हैं कि आलस्य में सुख नहीं मानना। सतत कुछ न कुछ प्रयत्न करते रहना चाहिए। नये नये उपक्रम लेने चाहिए। नयी-नयी योजना लेनी चाहिए। कार्य को और खुद को आगे बढ़ाते रहना चाहिए तथा उसके आगे जाकर बोलते हैं कि श्रेष्ठ कार्य करते समय अनेक कष्ट सहने पड़ते हैं। उत्तम दा के जीवन में भी देखा, वे लगातार प्रवास करते थे, बैठकें करते थे, लोगों से मिलते थे, कभी व्यवस्था में भी असुविधा होती थी फिर भी हर दृष्टि से मार्ग निकालकर वे आगे चलते थे। इस प्रकार की कई बातें हमने उत्तम पुरुष के रूप में उनके जीवन में अनुभव की हैं। मुझे लगता है कि इस अवसर पर उनके अच्छे गुणों को हम याद करें। ये गुण हमारे अंदर भी आयें, ऐसा सतत प्रयास करें। जिस लक्ष्य को लेकर उन्होंने काम किया था, उसको आगे बढ़ाना, यही उनके प्रति सही श्रद्धांजलि होगी। हम भारतीय पुनर्जन्म में विश्वास करते हैं इसलिए हम सबकी इच्छा है और ऐसा ही होगा हमें पूरा विश्वास है कि नया शरीर धारण करके उत्तम दा हमारे बीच में फिर लौटेंगें और फिर राष्ट्र पुनर्निर्माण के इसी कार्य में वे जुट जायेंगे। इन्हीं भावनाओं को व्यक्त करते हुए उनको पुन: एक बार श्रद्धासुमन अर्पित करता हूँ। उनके परिजनों को विशेषकर उनकी माता जी को इस परिस्थिति में ईश्वर धैर्य प्रदान करे।

अखिल भारतीय प्रचार प्रसार प्रमुख माननीय प्रमोद पेठकर (दिल्ली) का संदेश

उत्तम दा बीमार हैं, अस्पताल में हैं - ये समाचार

अतुलजी द्वारा मिले थे। उनके स्वास्थ्य लाभ की कामना भी की। फिर पता चला वेन्टीलेटर पर हैं और उनके चले जाने का समाचार जान कर अतीव दु:ख हुआ। दिल्ली में रहते मुझे आघात लगा तो साथ में काम करने वालों को कितना आघात लगा होगा यह कल्पना करना भी कठिन है।

कभी-कभी परमेश्वर को भी पूछने का मन करता है - ये तू ने क्या किया! अचानक किसी को भी ले जाना ठीक है क्या? संगठन के काम में कार्यकर्ताओं की कितनी आवश्यकता होती है, ये तो हम जानते हैं।

जब पहली बार बैठक में दक्षिण बंग प्रांत संगठन मंत्री की घोषणा के समय नाम सुना - उत्तम महतो, तो पहला विचार आया ये तो गुजरात का नाम है। गुजरात में होते तो उत्तमभाई होते। कुछ दिन बाद कार्यालय में 'दादा' सुना, तो लगा ये तो महाराष्ट्र का संबोधन है। महाराष्ट्र में बड़े भाई को दादा कहते हैं। परिचय में पता चला 'प्रचारक' हैं - सहजरुप में मन जुड़ गया। जब कभी दक्षिण बंग के प्रचार प्रमुख के बारे में अथवा वनबंधु पत्रिका के बारे में फोन पर बात चलती तो उनके सकारात्मक स्वभाव का परिचय होता। कोलकाता की अ. भा. बैठक में उनकी संगठन क्षमता का परिचय हुआ।

बहुत अधिक समय साथ में काम करने का अवसर नहीं मिला, फिर भी उत्तम दा इतना जल्दी चले जायेंगे ऐसा तो कभी सोचा ही नहीं था इसलिए आघातजनक लगा। कौन, कब चले जायेंगे ये तो किसी को पता नहीं होता फिर भी उत्तम दा का चले जाना कष्टमय तो था ही इसमें कोई दो राय नहीं। हम प्रार्थना करते हैं कि परम कृपालु परमात्मा उनकी पवित्र आत्मा को सद्गति प्रदान करें और परिवार जनों सहित हम सभी को दु:ख सहन करने की शक्ति दें। ■

अनुकरणीय

- डॉ रंजना त्रिपाठी, अलीपुर समिति

वनवासी कल्याण आश्रम के प्रांत चिकित्सा प्रमुख और समर्पित कार्यकर्ता श्री विवेक गोयल जी ने अपना जीवन वनवासी भाई-बहनों के स्वास्थ्य और सेवा कार्यों को समर्पित कर दिया है। अपने इस सेवा कार्य के माध्यम से वनवासी समाज के अंतिम पंक्ति के लोगों तक स्वास्थ्य सुविधा पहुँचाने में निरंतर सक्रिय रहते हैं। उनके दोनों पुत्र डॉ. किशन गोयल और डॉ. आयुष गोयल भी ख्यातिप्राप्त चिकित्सक हैं, जो स्वयं उनके जीवन के सेवा-संस्कारों को आगे बढ़ा रहे हैं। दोनों पुत्रों ने अपने बाल्यकाल से ही वनयात्राओं में भाग लेकर वनवासी समाज को बहुत ही पास से जाना और समझा है।

विवेक जी न केवल अपने कार्यों से बल्कि अपने जीवन-मूल्यों, सादगी और सेवाभाव से अन्य कार्यकर्तावृन्द के लिए सदैव प्रेरणा स्रोत बने हुए हैं। कोविड संक्रमण काल में अनेकानेक रुग्ण कार्यकर्ताओं के समीप खड़े रहे। अभी हाल ही में हमने अपने श्रद्धेय उत्तम दा को खोया है। किन्तु उत्तम दा को बचाने में विवेक जी अपने दोनों चिकित्सक पुत्रों के साथ दिन-रात लगे रहे। जब तक उत्तम दा अस्पताल में रहे, विवेक जी ने उनकी सेवा से शुश्रूषा में कोई कमी नहीं रखी।

कल्याण आश्रम परिवार श्री विवेक गोयल जी और उनके परिवार के प्रत्येक सदस्य के प्रति आभार व्यक्त करता है।

सेवा पथ पर बढ़ते जाते,
विवेक जी कभी न थकते, न रुकते,
वनवासी जन के दु:ख हरने,
अहर्निश बस कर्म करते जाते। ■

स्वर्गीय उत्तम दा की स्मृति सभा, कल्याण भवन

- सीमा रस्तोगी, सह क्षेत्रीय महिला प्रमुख

पूर्वांचल कल्याण आश्रम के दक्षिण बंगाल प्रांत के संगठन मंत्री, उत्तम महतो जी एक उत्तम स्वयंसेवक, कार्यकर्ता व प्रचारक थे, जिन्होंने अपनी कर्तव्य निष्ठा व कार्य कुशलता से कल्याण आश्रम के कार्यों को एक विस्तृत आयाम तक पहुँचा दिया था। ऐसे निष्ठावान, युवा कार्यकर्ता का अचानक परलोक गमन कर जाना कल्याण आश्रम के लिए एक अपूरणीय क्षति है, जिसे हम सबको पूर्ण करना है। 'यह अभिव्यक्ति राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह माननीय राम दत्त चक्रधर जी की है जो

पूर्वांचल कल्याण आश्रम द्वारा कोलकाता के कल्याण भवन में मंगलवार को आयोजित उत्तम महतो जी की सार्वजनिक स्मृति सभा में बोल रहे थे।' उन्होंने उत्तम दा की तुलना बगीचे के उस फूल से की, जो ऐसी माला में पिरोए गए थे, जिसे गजराज ने अपनी सूँड़ से खींच कर श्री हरि के चरणों में समर्पित किया था।

22 मई, 1972 में जन्मे उत्तम महतो जी ने संघ के प्रचारक के रूप में पुरुलिया, बांकुड़ा व अंडमान-निकोबार में कार्य किया था। भयंकर सिरदर्द व तीन दिनों तक ज्वर, (मेनिनजाइटिस बुखार) के कारण 52 वर्ष की अल्पायु में उनका 22 जून को कोलकाता के एक नर्सिंग होम में निधन हो गया था।

संघ के सरकार्यवाह माननीय दत्तात्रेय होसबोले, कल्याण आश्रम के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय सत्येंद्र सिंह व राष्ट्रीय संगठन मंत्री माननीय अतुल जोग ने अपने लिखित शोक संदेश में उत्तम महतो जी की अकस्मात मौत पर गहरा दु:ख जताते हुए बताया कि उत्तम दा सदा सकारत्मक बातें करते थे, और उनका इतनी अल्पायु में हम सभी को छोड़ कर चले जाना मन को व्यथित कर रहा है। उन सबके मनोभावों का वाचन शोक सभा में किया गया।

माननीय महादेव गोराई जी ने उत्तम दा के साथ अपनी पुरानी पहचान को याद करते हुए कहा कि वह ग्राम में शिक्षा दीक्षा पूर्ण करने के उपरांत संघ की शाखा में गए, फिर पुरुलिया के विस्तारक बने। 2018 में वह कल्याण आश्रम में आए और 2020 में संगठन मंत्री बने।

श्री संजय रस्तोगी जी, दक्षिण बंगाल प्रांत के मंत्री ने कहा कि अपने नाम के ही अनुरूप उत्तम थे, उत्तम दा। उनके अधूरे कार्यों को सब मिलकर पूरा करें, यही उनके लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी। उन्होंने बताया कि उनका आखिरी प्रवास मल्लारपुर का था। श्री सुशील सोरेन जी ने बांग्ला में अपना वक्तव्य रखते हुए बताया कि वे दूसरों के कार्य भी नि:संकोच तत्परता से कर देते थे।

माननीय भगवान सहाय जी, अखिल भारतीय सह संगठन प्रमुख ने कवि राम अवतार त्यागी जी की कविता की कुछ पंक्तियों से उत्तम दा के प्रति अपने मनोभावों को प्रकट किया-

'तन समर्पित, मन समर्पित
और यह जीवन समर्पित,

चाहता हूँ देश की धरती
तुझे कुछ और भी दूँ!'

उन्होंने कहा कि, उत्तम दा एक उत्तम संगठक थे। कल्याण आश्रम के कार्यों को अच्छी तरह से समझ कर कुशलतापूर्वक पूर्ण करते। ग्रामीण व शहरी कार्यों में सामंजस्य बनाते हुए हमारे 14 आयामों को उन्होंने भली-भाँति आगे बढ़ाया था।

उन्होंने भगवद्गीता के अध्याय 8 के श्लोक क्रमांक 6 को उद्धृत करते हुए कहा, जिसका अर्थ है कि, 'हे कुंतीपुत्र, मनुष्य जिस भी भाव का स्मरण करता हुआ शरीर त्यागता है, वह उसी भाव को प्राप्त होता है, क्योंकि वह सदा इस भाव से भावित रहता है!'

श्रीमती स्नेहलता बैद और वरिष्ठ कार्यकर्ता श्रीमती शशी अग्रवाल ने भावविह्वल होते हुए उत्तम दा के साथ अपने कार्य अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि उत्तम दा सबके घर परिवार में एक सदस्य के रूप में घुल मिल जाते थे।

श्री मोहनलाल गर्ग कोलकाता-हावड़ा महानगर अध्यक्ष ने कहा कि उत्तम दा का उन पर विशेष स्नेह था और उनका व्यवहार बहुत ही शालीन और विनम्र था। प्रांत चिकित्सा प्रमुख श्री विवेक गोयल जी ने कहा कि उत्तम दा ने हमें जो दिशा दिखाई है उसको पूरा करना, और वर्ष भर उनकी स्मृति में कार्यक्रम लेना ही हमारा अब उद्देश्य है।

क्षेत्रीय महिला प्रमुख श्रीमती शकुन्तला अग्रवाल ने उत्तम दा के साथ गुजारे हुए समय को याद करते हुए कहा कि उनके साथ कल्याण आश्रम के कार्यों को करते हुए उनसे बहुत लगाव हो गया था। उन्होंने बताया कि उनकी स्मृतियाँ उनके लिए धरोहर के समान हैं।

श्री जितेंद्र चौधरी जी ने उत्तम महतो दादा की निष्ठा, कार्यशैली को अपना आदर्श मानते हुए सभी को आवाहन किया कि उनके कार्यों को पूर्ण करना ही हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

श्रीमती कुसुम सरावगी हावड़ा महानगर उपाध्यक्ष ने कहा कि उनका अचानक चले जाना बहुत ही पीड़ादायक है।

डॉ. जयंत राय चौधरी ने उत्तम दा का जीवन परिचय दिया। कल्याण आश्रम के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री शंकरलाल अग्रवाल, श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के अध्यक्ष श्री महावीर बजाज, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक अद्वैत चरण दत्त, डॉ. जिष्णु बसु, शारदा पाल, सह क्षेत्र प्रचारक माननीय जलाकर महतो, प्रांत प्रचारक माननीय प्रशांत भट्ट, रंजीत अग्रवाल, सुकेश मंडल, महेश मोदी, विभाष मजूमदार, अनिल सांतरा, पवन केजरीवाल, राय चंद सुराणा, विमल मल्लावत, सीमा रस्तोगी, उमा सुराणा, राजेश अग्रवाल, संजय गोयल, सुखदेव टुडू, अनीता बुबना सहित कोलकाता हावड़ा महानगर के अनेक गणमान्य व्यक्ति व सामाजिक कार्यकर्ताओं ने भी उत्तम दा को अपनी श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

श्रीमती उमा सुराणा और सरिता सांगनेरिया ने 'सलाम उन सपूतों को...' गीत गाकर उत्तम दा के प्रति अपनी श्रद्धांजलि व्यक्त की।

तत्पश्चात् 1 मिनट का मौन व ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।। मंत्र के साथ शोक सभा का समापन हुआ। ■

कोलकाता महानगर योजना बैठक

- विमल मल्लावत, कोलकता-हावड़ा महानगर संपर्क प्रमुख

एक अच्छी योजना कार्य की आधी सफलता होती है और यह सफलता योजना बैठक से प्रारंभ होती है। इसी लक्ष्य को साधते हुए पूर्वांचल कल्याण आश्रम कोलकाता महानगर की योजना बैठक दिनांक 15 जून 2025, रविवार को कल्याण भवन में संपन्न हुई। इस योजना बैठक में गत वर्ष अप्रैल से इस वर्ष मार्च 2025 तक की सभी गतिविधियों का वृत्त रखा गया।

बैठक का प्रारंभ मंचासीन सभी अधिकारीगण द्वारा हमारे युगपुरुषों के चित्रों पर माल्यार्पण से हुआ। ओंकार ध्वनि तथा एकल गीत के बाद कार्यक्रम को तीन सत्रों में लिया गया।

प्रथम सत्र में सभी समितियों द्वारा वर्ष भर किए गए कार्यों की रिपोर्टिंग की गई।

दूसरे सत्र में विभिन्न प्रकल्पों के विषयों की चर्चा हुई, जिसमें मुख्यत: मकर संक्रांति शिविर, वस्तु संग्रह, सेवापात्र, वनयात्रा, चिकित्सा शिविर, युवा समिति के कार्य, दीपक-योजना, रामनवमी कार्यक्रम, स्वावलम्बन, राखी-मेला, कल्याण भारती आदि के विषय प्रमुखों ने पूर्ण विवरण दिया।

तृतीय सत्र में कार्यकर्ताओं के नये दायित्वों की घोषणा संजय रस्तोगी द्वारा की गई। तत्पश्चात् अखिल भारतीय कार्यकर्ता प्रमुख माननीय श्री कृष्ण भिड़े जी ने सभी कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन किया। अपने संबोधन में आपने कहा कि नये कार्यकर्ताओं को जोड़ने का सतत प्रयास करते रहना चाहिए। अपने संबोधन में आपने बताया कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और वनवासी कल्याण आश्रम दोनों ही संगठन राष्ट्र-जीवन को स्वस्थ करने में लगे हुए हैं। देश के सर्वोच्च पदों पर वनवासी विराजमान है, जो हमारे गौरव का विषय है। क्रीड़ा क्षेत्रों में वनवासी भाई बहन अपनी पहचान बनाए हुए हैं। आपका मानना है कि लक्ष्य तक पहुँचने के लिए कार्यकर्ताओं का सहयोग निरंतर अपेक्षित है। अपने कथन की पुष्टि के लिए आपने नौका चालक और पतवार सँभालने वाले की भूमिका का उदाहरण दिया। अपने वक्तव्य को विराम देते हुए आपने कार्यकर्ताओं की भूमिका की विशेष सराहना की। ■

हावड़ा महानगर योजना बैठक

– नीलिमा सिन्हा, हावड़ा महानगर महिला प्रमुख

आज, 22 जून 2025 को हावड़ा महानगर द्वारा आयोजित हावड़ा कार्यालय में 'योजना बैठक' हुई जिसमें हमें अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री श्री भगवान सहाय जी शर्मा द्वारा मार्गदर्शन मिला। उन्होंने हमें विस्तार से 'पंच परिवर्तन' की बात बताई और सभी पदाधिकारियों से संघ का संदेश घर-घर तक पहुँचाने का आह्वान किया। सभी पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं से कहा गया कि वे अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल की बैठक में तय किए गए मुद्दों के अनुसार कुटुंब प्रबोधन, पर्यावरण संरक्षण, स्वदेशी जीवन शैली, सामाजिक समरसता और नागरिक कर्तव्य के पंच परिवर्तन का संदेश हर गांव और कस्बे तक पहुँचायें और लोगों को उनका अनुसरण करने के लिए प्रेरित करें।

हावड़ा महानगर 'योजना बैठक' में गत वर्ष, अप्रैल 2024 से इस वर्ष मार्च 2025 तक की सभी गतिविधियों का वृत्त रखा गया।

कार्यक्रम 2 सत्र में हुआ। प्रथम सत्र में समितियों और महानगर के विषयों की रिपोर्टिंग ली गई और दूसरे सत्र की शुरुआत में हमारे दक्षिण बंग प्रांत के संगठन मंत्री, श्रीमान उत्तम दा के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ हेतु सामूहिक हनुमान चालीसा पाठ किया गया। तत्पश्चात दक्षिण बंग प्रांत के मंत्री माननीय संजय जी रस्तोगी के द्वारा सम्भाग तथा महानगर कार्यकारिणी की घोषणा की गई, तथा कोलकाता - हावड़ा महानगर सम्भाग अध्यक्ष, मोहनलाल जी गर्ग ने सभी समितियों के दायित्व की घोषणा की। कार्यक्रम के समापन में माननीय भगवान सहाय जी के वक्तव्य ने सभी कार्यकर्ताओं में ऊर्जा का संचार किया। ■

समाचार विज्ञप्ति

दिल्ली के बिरसा मुण्डा भवन में यज्ञ के साथ प्रवेश

– प्रमोद पेठकर, प्रचार प्रमुख, व.क.आ., दिल्ली

जनजाति शोध एवं प्रशिक्षण हेतु निर्मित भगवान बिरसा मुण्डा भवन में 4-जून, 2025 को जेष्ठ शु. नवमी के शुभ दिन यज्ञ के आयोजन द्वारा प्रवेश कार्यक्रम संपन्न हुआ। इस निमित्त अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय सत्येंद्र सिंह रांची से सपरिवार पधारे थे।

आज यज्ञ के पुनीत अवसर पर दिल्ली प्रतिष्ठित जन तथा कल्याण आश्रम के कार्यकर्ता भी पधारे। कल्याण आश्रम के संयुक्त महामंत्री विष्णुकांत, अ.भा. व्यवस्था प्रमुख डॉ. विश्वामित्र, सह-व्यवस्था विजय कुमार, प्रशासनिक संपर्क प्रमुख प्रवीण डोलके सहित कई अखिल भारतीय अधिकारी भी उपस्थित रहे।

यज्ञ की पूजाविधि में श्री सत्येन्द्र सिंह एवं चैतन्य अग्रवाल सपरिवार उपस्थित थे और कल्याण आश्रम के संरक्षक शांति स्वरूप बंसल, सत्यपाल जी, प्रांत महिला प्रमुख भारती जी तथा डॉ. पंखुड़ी भी सहभागी हुई।

दक्षिण दिल्ली के पुष्प विहार स्थित इस भव्य भवन का काम सभी प्रकार की आवश्यकताओं के साथ पूर्णता की ओर है। आर्किटैक्ट चैतन्य अग्रवाल एवं संचालन समिति के कार्यकर्ताओं का निर्माण कार्य में विशेष योगदान रहा।

अब कुछ दिनों बाद एक सार्वजनिक कार्यक्रम के साथ शोध केंद्र कार्यरत होगा। वर्तमान समय की माँग को देख यहाँ देश भर से जनजाति के बारे में शोध करने वाले व्यक्तियों का केन्द्र से जुड़ना, युवा शोधार्थियों का प्रशिक्षण एवं प्रबोधन होगा। ■

वह गौरवमयी क्षण!

कल्याण आश्रम का कार्यकर्ता किसी पुरस्कार के लिए कार्य नहीं करता। लेकिन फिर भी पिछले 73 सालों से कल्याण आश्रम जनजाति समाज की सर्वांगीण उन्नति के लिए जो कार्य कर रहा है, यह कार्य जिनके अथक परिश्रम से आगे बढ़ रहा है ऐसे कल्याण आश्रम के किसी कार्यकर्ता को एक प्रतिनिधि के रूप में अगर पद्मश्री जैसा पुरस्कार मिलता है तो देश भर में कार्यरत सभी कार्यकर्ताओं का सीना 56 इंच का हो जाता है।

पिछले लगभग 35 सालों से ग्राम विकास के क्षेत्र में निरंतर कार्य करते हुए महाराष्ट्र के बारीपाड़ा इस छोटे से गाँव को अपने सैकड़ों साथियों को साथ लेकर जिन्होंने एक नई ऊँचाई पर पहुँचाया, ऐसे कल्याण आश्रम के अपने कार्यकर्ता श्रीमान चैतराम पवार जी को आज नई दिल्ली के राष्ट्रपति भवन में पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया। अपने जनजाति समाज के लिए कार्यरत हजारों समर्पित एवं निष्ठावान कार्यकर्ताओं का यह एक प्रतिनिधिक सम्मान है। ■

रक्तदान - सेवा की श्रेष्ठतम अभिव्यक्ति

- संजय गोयल, दक्षिण बंग प्रांत नगरीय प्रमुख

रक्तदान केवल एक सेवा नहीं, यह जीवन रक्षा का संकल्प है। यह कार्यकर्तावृन्द की राष्ट्रसेवा और समाज-प्रेम का जीवंत प्रमाण है।

सेवा, समर्पण और राष्ट्रभावना के मार्ग पर चलने वाले पूर्वांचल कल्याण आश्रम के कार्यकर्तावृन्द ने हाल ही में एक रक्तदान शिविर का आयोजन कर मानवता का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया।

यह आयोजन कोलकाता महानगर की बागबाज़ार पुरुष, कुम्हार टोली महिला समिति और शारदा नगर (राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ) ने मिलकर किया, जिसमें 68 रक्तदाता थे। 150 से अधिक कार्यकर्ताओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

रक्तदान शिविर का शुभारंभ वैदिक मंत्रों और दीप-प्रज्वलन के साथ हुआ। उपस्थित कार्यकर्ताओं को चिकित्सा विशेषज्ञों ने रक्तदान की आवश्यकता और लाभों की जानकारी दी। उसके बाद कार्यकर्ताओं ने पूरे उत्साह और आत्मीयता के साथ रक्तदान किया। कार्यक्रम में युवा कार्यकर्ताओं, महिला टोली और स्वयंसेवकों की विशेष भागीदारी रही। रक्तदान के पश्चात् सभी रक्तदाताओं को स्वास्थ्य सामग्री और प्रमाणपत्र दिए गए।

यह आयोजन कल्याण आश्रम की मूल भावना - "नर सेवा ही नारायण सेवा है" को सजीव करता है। सेवा, संवेदना और समर्पण की इस प्रेरणा को संजोते हुए, कार्यकर्तावृन्द ने यह संदेश दिया कि

हर व्यक्ति अपने हिस्से की मानवता निभा सकता है। बस एक क़दम आगे बढ़ाने की देर है।

"रक्तदान केवल एक दैहिक योगदान नहीं, बल्कि यह आत्मीयता, करुणा और मानवता की सबसे सजीव अभिव्यक्ति है। यह कार्य हमें आत्मगौरव और समाज के प्रति उत्तरदायित्व का बोध कराता है।" इस पावन अवसर पर महिलाओं, युवा टोली तथा स्वयंसेवकों की सक्रिय भूमिका सराहनीय रही। भोजन एवं विश्राम व्यवस्था के साथ साथ, शिविर के समापन पर राष्ट्रगान के साथ यह सेवा-यज्ञ पूर्ण हुआ।

कल्याण आश्रम का यह रक्तदान शिविर न केवल एक सेवा गतिविधि थी, अपितु यह एक संदेश था कि समाज के लिए समर्पण का अर्थ केवल भाषण नहीं, बलिदान और कर्म होता है। ■

बोधकथा..

पिता की सीख

एक बार दो भाई मुकदमे में फँस अदालत पहुँचे। एक धनवान और दूसरा गरीब। जज को यह देख आश्चर्य हुआ। उन्होंने पैसे वाले भाई से पूछा, 'तुम दोनों भाई हो, लेकिन तुम अमीर हो और तुम्हारा भाई इतना गरीब। ऐसा क्यों?'

धनी भाई ने कहा, कई साल पहले जब हमारे पिता का निधन हुआ तो उन्होंने दौलत बराबर-बराबर बांटी। साथ में उन्होंने हमें इसके इस्तेमाल की सही सीख भी दी लेकिन भाई के हाथ जो पैसा आया, उसी दिन से अपने को धनी समझने लगा, सारा काम नौकरों के भरोसे छोड़ दिया। उसे आलस ने घेर लिया। नौकरों ने पैसा पानी की तरह बहा दिया। थोड़े दिन बाद ऐसी स्थिति आई कि भाई के पास कौड़ी भी नहीं रही। जबकि मैंने मेहनत करनी नहीं छोड़ी। मैंने कभी दूसरों के ऊपर काम नहीं छोड़ा। छोटा-बड़ा जो भी काम हुआ मुस्तैदी से किया। इससे मेरी दौलत बढ़ी और आज मैं इस स्थिति में हूँ कि वक्त पड़ने पर दूसरों की मदद भी कर देता हूँ। अगर मैं भी दूसरों के भरोसे रह जाता और आलसी बना रहता तो मेरा भी मेरे अनुज जैसा हाल होता। कहने का तात्पर्य है कि दूसरों के भरोसे कोई आगे नहीं बढ़ सकता। ■

अमृत वचन

संयम, साधना और सेवा – ये तीन जीवन को महान बनाते हैं।

- आचार्य महाश्रमण

कविता (स्वर्गीय उत्तम दा की स्मृति में)..........................

दीपक बनकर जलते थे

- सुनीता जैन

न थकते थे, न रुकते थे,
वे कर्म के पथ पर चलते थे।
कोई स्वार्थ नहीं, संगठन हेतु
वे दीपक बनकर जलते थे।।

न फल की चिंता करते थे,
न यश की चाह ही रखते थे।
कर्त्तव्य को पूजा माना था,
वे योगी सम ही रहते थे।।

सूरज सा तपते थे दिन भर,
और चंद्र सा शीतल रहते थे ।
हर दुख-सुख को सम समझा था,
संयममय जीवन में जीते थे।।

हाथों में श्रम का गहना था
मन में धरा श्रद्धा का दीप।
वे कर्म की पूजा करते थे,
थे ईश्वर के सबसे समीप।।

साधन था कुछ भी पास नहीं,
सेवा ही उनकी साधना थी।
सच तो ये है कि उनकी हर साँस
प्रभु की सम्यक् आराधना थी।।

सुन्दरवन यात्रा की झलकियाँ

सुंदरवन में बसा हुआ है, सुंदर सा यह छात्रावास;
प्रीतिलता के अवलोकन से, हृदय में भरता चिर-उल्लास।

उत्तम महतो स्मृति सभा

उत्तम महतो अमर रहे।
धर्म-कर्म का ज्वार बहे।।

Printed Matter

Book - Post

If Undelivered Please Return To :

Purvanchal Kalyan Ashram
29, Ward Institution Street
(Near Maniktalla Post Office)
Kolkata-700006
Phone: +91 33 2360 8334
E-mail: kalyanashram.kol@gmail.com